आज की मुरली का सार ---------- Date: 10-06-2014

बाबा ने हमारा निश्चय पक्का करने के लिए बहुत सारी ऐसी बातें कही है, जो इस संसार की कोई भी जीव-आत्मा कभी भी कह नहीं सकती.

- यह मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ हैं, जिसे कल्प वृक्ष भी कहते हैं, उसकी उत्पति, पालना फिर विनाश कैसे होता हैं, सारा बुद्धि में आना चाहिए. जैसे वह जड़ झाड़ होता हैं, यह हैं आत्माओं का चैतन्य झाड़. इसका बिज, परमपिता-परमात्मा भी चैतन्य हैं.

- मनुष्यों भगवान की महिमा में गाते भी हैं, वह सत्य हैं, चैतन्य हैं अर्थात वह चैतन्य बिज इस जीव-आत्माओं के चैतन्य झाड़ का आदि, मध्य, अन्त का राज बता रहे हैं.

- उस रुहानी बाप की महिमा हैं सुख का सागर, शांति का सागर....पहले यह बुद्धि में रहेगा यह बेहद का बाप हैं जिससे बेहद का वर्सा, 21 जन्म संपूर्ण सुख और शांति मिलती हैं. बाबा हमें पावन दुनिया, स्वर्ग का मालिक बनाते हैं.

- अब तुम आत्मा जानती हो वह निराकार, पतित-पावन बाप इस तन में आया हैं. यह भूलना नहीं हैं, हम उनके बने हैं. यह सौभाग्य तो क्या पदमा-पदम भाग्य की बात हैं.

- ये लक्ष्मी-नारायण सतयुग में थे और तुम आत्मायें भी सतयुग में थी. फिर पुनर्जन्म लेते-लेते, 16 कला से 14-12 कला में आये. वहीं देवतायें जब वाम मार्ग में जाते हैं तो फिर उनको देवता भी नहीं कह सकते. इसलिए कोई भी ऐसे नहीं कहेंगे की हम उनकी वंशावली के हैं. अगर वंशावली के समझते तो खुद को पतित और देवी-देवताओं को पावन समझ कर उनकी महिमा नहीं करते.

- यह (ब्रह्मा का शरीर) कोई गुरु, महात्मा, महापुरुष आदि कुछ नहीं हैं. यह तो साधारण मनुष्य तन हैं, सो भी बहुत पुराना हैं. बहुत जन्मो के अन्त में प्रवेश करता हूं. और तो कोई इनकी (ब्रह्मा की) महिमा नहीं सिर्फ इसमें (ब्रह्मा के तन में) प्रवेश करता हूं तब इनका नाम प्रजापिता ब्रह्मा गाया जाता हैं.

- ब्रह्मा, विष्णु, शंकर - उन्हों का रचयिता भी शिवबाबा हैं.

- ज्ञान सागर बाप एक ही हैं. बाप ने तुम्हें अपना और सारे चक्र का भी परिचय दिया हैं, जो और कोई दे न सके इसलिए बाप कहते हैं तुम बच्चे हो स्वदर्शन चक्रधारी.

- यह बेहद का सृष्टि रूपी अनादि अविनाशी ड्रामा हैं. इसमें सब एक्टर्स अविनाशी पार्ट बजाते हैं. इतनी छोटी आत्मा, इतना बड़ा, 84 जन्म का पार्ट इसमें भरा हुआ हैं - शरीर लेने और छोडने का और पार्ट बजाने का. ऐसी बातें कोई भी शास्त्रों में नहीं हैं, ना कोई गुरु ये बातें सुना सकते हैं. यह तो बाप, इस ब्रह्मा के तन में, बैठ सुनाते हैं.

- बेहद के बाप को ही फोलो करना हैं, जैसे बारात होती हैं ना. भक्ति में शिव की भी बारात बताते हैं. वही शिवबाबा कहते हैं यह हमारी बारात हैं. तुम भक्तियां हो, मैं हूं भगवान. तुम आत्माये सब सजनिया हो, बाबा आये हैं तुमको श्रृंगार कर ले जाने.

- बाप को महाकाल भी कहते हैं. कालों का काल महाकाल, सब आत्माओं को पवित्र गुल-गुल बनाकर ले जाते हैं. आत्माये बाप को याद करने से ही पवित्र गुल-गुल बनती हैं. गुल-गुल बन जाये तो फिर बाप भी ले चलेंगे गोंद में.

- यह ज्ञान सिवाय बाप के कोई भी ऋषि-मुनि आदि दे नहीं सकते. लौकिक गुरु तो किसको भी मुक्ति-जीवनमुक्ति का रास्ता बता नहीं सकते. तुम समझते हो कोई भी मनुष्य गुरु हो नहीं सकता, जो कहे - हे आत्माओं, बच्चों में तुमको समझाता हूं. बाप को तो सबको "बच्चे-बच्चे" कहने की प्रैक्टिस हैं. बाप कहते भी हैं में सबका रचयिता हूं, यह हमारी रचना हैं. तुम सब भाई-भाई हों.

ॐ शांति.

Please provide your feedback/suggestion to Atma Bhai on email -

a.brahmin.soul@gmail.com

www.bkdrluhar.com